बी.ए. अर्थशास्त्र
प्रथम वर्ष
व्यष्टि अर्थशास्त्र (प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय – 1 अर्थशास्त्रा : प्रकृति विषय क्षेत्र
अर्थशास्त्र का उद्‌भव एवं ऐतिहासिक परिचय, अर्थशास्त्र की परिभाषा सम्बन्धी समस्याएं, अर्थशास्त्र की परिभाषाएं, अर्थशास्त्र की कुछ अन्य परिभाषाएं, अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री या क्षेत्र, अर्थशास्त्र का स्वभाव, अर्थशास्त्र का महत्व

अध्याय – 2 अर्थशास्त्रा में विधियाँ, निगमन प्रणाली अथवा अनुमान प्रणाली, प्रणाली के गुण, प्रणाली के दोष, अनुभव प्रणाली या आगमन प्रणाली, गुण, दोष, दोनों प्रणालियों के सम्बन्ध में विवाद, निगमन तथा आगमन प्रणालियों की पूरकता

अध्याय – 3 उपयोगिता विश्लेषण (गणवाचक व क्रमवाचक) उदासीन वक्र एवं उपभोक्ता का साम्य (हिक्स एवं स्लटस्की), उपयोगिता, उपयोगिता की माप सम्भव है, उपयोगिता के प्रकार, कुल उपयोगिता, सीमान्त उपयोगिता, एवं कुल उपयोगिता में सम्भन्ध, अर्थशास्त्रा के सिद्धान्त में सीमान्त की अवधरणा, सीमान्त उपयोगिता ह्यस नियम, सम–सीमान्त उपयोगिता नियम, उदसीनता वक्र, प्रतिस्थापन की सीमान्त दर अथवा सीमान्त प्रतिस्थापन दर, घटती हुई प्रति स्थापन दर का सिद्धान्त, तटस्थता वक्र तथा उपभोक्ता का संतुलन, आय प्रभाव, मूल्य प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभावः स्लट्स्की का दृष्टिकोण, प्रतिस्थापन प्रभावः हिक्स तथा स्लट्स्की के दृष्टिकोणों की तुलना, कीमत प्रभाव के विभाजन की रीतियाँ

अध्याय – 4 माँग व माँग का नियम, माँग का आशय एवं परिभाषाएँ, माँग के भेद, माँग के अन्य प्रकार, माँग को प्रभावित करने वाले कारक, माँग का नियम, माँग में विस्तार एवं संवुफचन, माँग में वृद्धि या कमी, माँग में कमी तथा माँग के संवुफचन में भेद, माँग की वृद्धि तथा माँग के विस्तार में भेद

अध्याय – 5 माँग की लोच, माँग की लोच, परिभाषा, माँग की लोच के प्रकार या श्रेणियाँ, माँग की लोच को मापने की रीतियाँ, माँग की लोच पर प्रभाव डालने वाले तत्व, माँग की लोच का महत्व, विज्ञापन तथा माँग की लोच

अध्याय – 6 उपभोक्ता की बचत एवं एंजल वक्र, उपभोक्ता की बचत, मुद्र की सीमान्त उपयोगिता, प्रभावित करने वाले तत्व, माप और उसकी कठिनाइयों, आलोचनाएँ, तटस्थता वक्रों द्वारा निरूपण, महत्व

खण्ड - II

अध्याय – 7 उत्पादन फलन, अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उत्पादन फलन, रेखीय समरूप फलन, कॉब–डगलस का उत्पादन फलन, परिपर्तनशील अनुपात का नियम, उत्पत्ति शस नियम की क्रियाशीलता का स्थगण

अध्याय – 8 आर्थिक क्षेत्रा, साध्नों का अनुकूलतम संयोग, विस्तार पथ तथा पैमाने के प्रतिपफल, विस्तार पथ, सम–उत्पादन वक्र, द्धजू रेखायें अथवा उत्पादन के आर्थिक क्षेत्रा की सीमाएँ, पैमाने के प्रतिपफल आशय, पैमाने के प्रतिपफल के निर्धरक घटक

अध्याय – 9 पैमाने की बचतें, बड़े पैमाने का उत्पादन, बड़े पैमाने के दोष, बड़े पैमान के उत्पादन की वाँछनीयताएँ, छोटे पैमाने का उत्पादन, छोटे पैमाने के उत्पादन के दोष, आर्थिक विकास में छोटे पैमाने के उद्योगों की भूमिका

अध्याय – 10 लागत, उत्पादन लागत के प्रकार, दीर्धकालीन लागतें, दीर्धकालीन औसत लागत वक्र के लक्षण, दीर्धकालिक सीमान्त लागत तथा दीर्धकालिक औसत लागत में सम्बन्ध

अध्याय – 11 फर्म का साम्य, साम्य का वर्गीकरण

अध्याय – 12 बाजार संरचना, बाजार आशय एवं परिभाषाएँ, बाजार की विशेषताएँ, बाजार का वर्गीकरण, बाजार के विस्तार के कारण, बाजार के रूप, पूर्ण या विशु प्रतियोगिता का औचित्य, विशु एकाधिकार, अपूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकारी प्रतियोगिता, अल्पाधिकारी, द्वयाधिकार, पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता में अन्तर

खण्ड - III

अध्याय – 13 पूर्ण प्रतियोगिता, मूल्य निर्धारण का सामान्य सिद्धान्त, प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का विचार, आधुनिक अर्थशास्त्रियों का विचार, मूल्य निर्धारण का विरोधाभास

अध्याय – 14 एकाधिकार एवं कीमत विभेद, एकाधिकार – आशय व परिभाषा, वर्गीकरण, एकाधिकारी – शक्ति, एकाधिकारी – शक्ति के प्रकार, एकाधिकार के कारण, मूल्य निर्धारण के सम्बन्ध में मान्यताएँ, एकाधिकारी का उद्देश्य, क्या एकाधिकारी 'कीमत' तथा 'उत्पादन' दोनों को एक साथ निश्चित कर सकते हैं?, एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण, अल्पकाल में एकाधिकार साम्य, दीर्घकाल में एकाधिकार का साम्य, क्या एकाधिकार मूल्य तथा स्पर्धात्मक कीमत से ऊँची होती है?, प्रतियोगिता के भय में एकाधिकार मूल्य, एकाधिकार शक्ति को सीमित करने वाले कारक, एकाधिकार का नियंत्रण, मूल्य विभेद

अध्याय – 15 एकाधिकृत प्रतियोगिता, एकाधिकृत प्रतियोगिता की दशाएँ व लक्षण, अपूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकृत प्रतियोगिता को समानार्थी मानना, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में मूल्य निर्धारण, मूल्य निर्धारण की विधियाँ, अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत आगम एंव लागत वक्र, समूह साम्य, एकाधिकार एंव एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर

अध्याय – 16 द्वियाधिकार एवं अल्पाधिकार, आशय, अल्पाध्किार के अन्तर्गत मूल्य निर्धरण, मूल्य नेतृत्व के अन्तर्गत मूल्य निर्धरण

अध्याय – 17 कराधन तथा नियंत्रित एवं प्रशासित कीमत, करारोपण, प्रभाव, कीमत नियंत्राण

अध्याय – 18 वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त, परिभाषाएँ, वितरण के एक प्रथम सि(ान्त की आवश्यकता, सीमान्त उत्पादकतों सिद्धान्त, मान्यताएँ, आधुनिक सिद्धान्त

खण्ड - IV

अध्याय – 19 मजदूरी, मजदूरी का आशय, मजदूरी निर्धारण के सिद्धान्त

अध्याय – 20 लगान, लगान : अर्थ एंव परिभाषा, लगान के स्वरूप, आर्थिक लगान तथा ठेका लगान, लगान के सिद्धान्त, रिकार्डो के लगान सिद्धान्त तथा आधुनिक सिद्धान्त लगान में अन्तर, लगान तथा कीमत, आभास लगान, आभास लगान

अध्याय – 21 ब्याज, ब्याजः अर्थ एवं परिभाषा, कुल ब्याज के संघटक, ब्याज के विभिन्न सिद्धान्त, क्या ब्याज की दर शून्य हो सकती है।

अध्याय – 22 लाभ, लाभ : अर्ध व परिभाषाएँ, कुल लाभ व शुद्ध लाभ, कुल लाभ के संघटक, लाभ के विभिन्न सिद्धान्त

अध्याय – 23 कल्याण अर्थशास्त्र, कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ, कल्याण अर्थशास्त्रा एवं सरकार की भूमिका, व्यक्तिगत कल्याण एवं सामाजिक कल्याण, अन्तः व्यक्ति उपयोगिताओं की तुलना एवं कल्याण अर्थशास्त्रा, कल्याण अर्थशास्त्रा की मान्यताएं व शर्तें, व्यक्तिगत कल्याण एवं सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया, कल्याण अर्थशास्त्रा की सीमाएं

अध्याय – 24 परेटो का कल्याण अर्थशास्त्र, संख्या सूचक व क्रम सूचक उपयोगिता, उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्ति तुलना एवं सामाजिक आर्थिक कल्याण, विल्प्रेफडो परेटो एवं कल्याण अर्थशास्त्र, परेटो श्रेष्ठता, परेटो इष्टमता तथा सहमति सिद्धान्त, परेटो की इष्टम शर्तें, उत्पादन संभाव्यता वक्र एवं इष्टतम विनिमय स्थिति, इष्टतम विनिमय तथा उपयोगिता संभावना वक्र, परेटो इष्टतम शर्तें एवं पूर्ण प्रतियोगिता, क्या परेटो की इष्टतम शर्तें पूरी हो सकती हैं ?, द्वितीय श्रेष्ठ प्रमेय

अध्याय – 25 सामाजिक कल्याण फलन, नव–कल्याण अर्थशास्त्रा का अर्थ, पीगू के आदर्श उत्पादन की विलियम बॉमोल द्वारा विवेचना, परम्परागत कल्याण अर्थशास्त्रा की अव्यावहारिकता, वैयक्तिक कल्याण तथा सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया

अध्याय – 26 क्षतिपूर्ति सिद्धान्त, क्षतिपूर्ति का अर्थ एवं आवश्यकता, क्षतिपूर्ति मापदण्ड, क्षतिपूर्ति सिद्धान्तों की आलोचना, आय में समानता की समस्या तथा रॉल्स का 'न्याय का सिद्धान्त

भारतीय अर्थव्यवस्था (द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड – I

अध्याय – 1 भारत में भू–प्रणाली, औद्योगिक विकास एवं बैंकिंग विकास
भूमि सुधर, उद्योगों की भूमिका, केन्द्रीय बैंक, मौद्रिक नीति, व्यापारिक बैंक

अध्याय – 2 स्वतन्त्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था
18वीं शताब्दी के मध्य में भारतीय अर्थव्यवस्था, आर्थिक आधारित संरचनाएँ, सामाजिक अधः संरचनाएँ, स्वतंत्राता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति

अध्याय – 3 भारत में नियोजन व्यवहार
भारत में नियोजन, योजना आयेाग, बम्बई योजना, जन–योजना, गाँधीवादी योजना

अध्याय – 4 भारतीय अर्थव्यवस्था का ढाँचा
भारत–एक विकासशील अर्थव्यवस्था

अध्याय – 5 जनसंख्या की समस्या एवं जनसंख्या नीति
जनसंख्या वृद्धि के कारण, जनंसख्या वृद्धि को रोकने के, सुझाव, जनांकिकीय संक्रमण का सिद्धान्त, अल्प–विकसित देशों, जानांकिकीय विशेषताएँ, जनसंख्या वृद्धिः आर्थिक विकास में सहायक, जनसंख्या वृद्धिः आर्थिक विकास में बाधक, भारत में जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास और जनसंख्या, जनसंख्या नीति, परिवार नियोजन, जनांकिकीय प्रवृत्तियाँ

अध्याय – 6 आधारभूत ढाँचे का विकास
वर्गीकरण, आर्थिक आधारित संरचना, मानव संसाधन, विकास का अर्थ एवं महत्व, स्वास्थ्य एवं पोषण

खण्ड – II

अध्याय – 7 राष्ट्रीय आय
राष्ट्रीय आय का अर्थ, प्रति व्यक्ति आय का अर्थ, राष्ट्रीय आय का अनुमान, केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन, स्वतंन्त्रता के पश्चात राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ, महत्व, भारत में राष्ट्रीय को मापने में कठिनाइयाँ, राष्ट्रीय आय में प्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय की वार्षिक वृद्धि दर, भारत की प्रति व्यक्ति आय तथा GDP की विकास दर की अन्य देशों से तुलना, विभिन्न देशों के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर, राष्ट्रीय आय का ढाँचा, राष्ट्रीय आय में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान में तुलनात्मक परिवर्तन, भारत की राष्ट्रीय आय की मुख्य विशेषताएँ, कम राष्ट्रीय आय के कारण, भारत की राष्ट्रीय आय बढ़ने सुझाव

अध्याय – 8 भारत में नियोजन : उद्देश्य, रणनीति, सफलताएँ एवं असफलताएँ
भारत की पंचवर्षीय योजनाओं की समयावधि, भारत में नियोजन के उद्देश्य, नियोजन एक कठिन कार्य, विकास योजाओं की सफलताएँ एवं उपलब्धियाँ, विकास योजनाओं की विफलताएँ अथवा कमियाँ, योजनाओं की असफलताओं के कारण, योजनाओं को सफल बनाने के सुझाव, पंचवर्षीय योजनाएँ, योजनाओं की समीक्षा, नवीं योजना, दसवीं पंचवर्षीय योजना

अध्याय – 9 ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च 2012 तक)
दृष्टि तथा युक्ति, ग्यारहवीं योजना के प्रमुख लक्ष्य, समष्टि आर्थिक रूपरेखा, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की वित्तीय संरचना, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में विभिन्न क्षेत्रों का सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय, रोजगार परिप्रेक्ष्य, खण्डीय नीतियाँ

अध्याय – 10 चालू पंचवर्षीय योजना

उद्देश्य, निवेश एवं बचत आवश्यकताएँ, संसाधनों का बँटवारा, वित्त व्यवस्था, आधारिक संरचना निवेश, रणनीति, मूल्यांकन

अध्याय – 11 नये आर्थिक सुधारः उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्वीकरण

1991 से पूर्व की आर्थिक नीति की विशेषताएँ, 1991 का आर्थिक चित्र, 1991 से आर्थिक सुधार, नई औद्योगिक नीति, उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण, नई आर्थिक नीति के लाभ, नई आर्थिक नीति की कमियाँ

खण्ड – III

अध्याय – 12 कृषि

विशेषताएँ, कृषि उत्पादकता की प्रकृत्तियाँ, निम्न कृषि उत्पादकता के कारण, सुझाव

अध्याय – 13 भूमि सुधार

भूमि सुधार की परिभाषा, उद्देश्य एवं आवश्यकताएँ, भारत में योजनावधि में सुधार, भारत में प्रमुख भूमि सुधार, भूमि सुधारों की समीक्षा, सुझाव, कृषि जोतों का विपणन, भारत में जोतों का उप–विभाजन एवं अपरखण्डन, भूमि सुधार, भारत में भूमि सुधारों की धीमी प्रगति के कारण, भूमि सीमा बन्दी, कृषि तकनीकी का चयन
प्रौद्योगिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी का चयन

अध्याय – 14 नई कृषि रणनीतियाँ एवं हरित क्रान्ति

नई कृषि अक्ति के प्रमुख संघटक, हरित क्रान्ति, कृषि यन्त्रीकरण का अर्थ, एवरग्रीन रिवॉल्यूश्न, पीली क्रान्ति, भारत में खेत क्रान्ति ऑपरेशन फ्लड

अध्याय – 15 ग्रामीण साख

कृषि साख की आवश्यकता, कृषिवित्त नीति, कृषि द्धण नीति के प्रभाव, राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, कृषि वित्त प्रणाली में कमजोरियाँ

अध्याय – 16 कृषि विपणन

आदर्श कृषि विपणन पद्धति, कृषि पदार्थो के विक्रय की वर्तमान व्यवस्था, विक्रय व्यवस्था के दोष या कठिनाइयाँ, कृषि विपणन व्यवस्था को सुधारने हेतु किए गए कार्य, सहकारी विपणन

अध्याय – 17 योजनाकाल में औद्योगिक विकास

भारत में औद्योगिक विकास, पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक विकास, योजना काल में औद्योगिक विकास

अध्याय – 18 औद्योगिक एवं लाइसेन्सिंग नीतियाँ

औद्योगिक नीति के उद्देश्य, औद्योगिक नीति 1948, औद्योगिक नीति 1956, औद्योगिक नीति 1977, औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली, औद्योगिक नीति की कमियाँ, फेरा

अध्याय – 19 लघु उद्योग

लघु क्षेत्र, लघु उद्योग का तर्काधार, लघु उद्योगों की प्रगति, लघु उद्योगों की समस्याएँ, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन के उपाय, लघु एवं बड़े उद्योगों का सह–अस्तित्व, लघु उद्योगों के लिए नयी नीति, 1991, लघु पैमाने के उद्योगों के लिये नवीनतम प्रोत्साहन, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006 की प्रमुख विशेषताएँ

अध्याय – 20 सार्वजनिक उपक्रम

लोक उपक्रम की परिभाषा, आवश्यकता, औचित्य, लोक उपक्रम पर सामाजिक नियंत्रण, संगठन का स्वरूप, नियोजन काल में लोक उपक्रम, वर्तमान स्थिति, सार्वजनिक क्षेत्र की नीति के भावी दिशा–निर्देश, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में विनिवेश, लोक उपक्रमों की उपलब्धियाँ, नई सार्वजनिक क्षेत्र नीति, भूमिका एवं योगदान, सार्वजनिक उद्यमों की

निष्पादनता, असफलताएँ, सार्वजनिक उद्यमों की निम्न निष्पादकता के कारण, सुझाव, निजी क्षेत्र, विनिवेश

खण्ड – IV

अध्याय – 21 विदेशी व्यापार : भूमिका, प्रवृत्तियाँ

विदेशी व्यापार का महत्व, स्वतंत्रता से पूर्व विदेशी व्यापार, योजनाकाल में विदेशी व्यापार, प्रमुख निर्यात, निर्यात वृद्धि के लिए सुझाव, निर्यात वृद्धि के लिए सरकारी प्रत्यन्न, विदेशी व्यापार की संरचना, विदेशी व्यापार की दशा, विदेशी व्यापार की संवृद्धि एवं संरचना

अध्याय – 22 भुगतान संतुलन

भुगतान संतुलन का अर्थ, व्यापार संतुलन, व्यापार संतुलन एवं व्यापार संतुलन में अंतर, संरचना एवं स्वरूप, भुगतान शेष में असंतुलन, कुल भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ, चालू खाते पर भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ, भुगतान संतुलन संकट, प्रतिकूल भुगतान शेष/प्रतिकूल व्यापार शेष के कारण, भुगतान शेष के असंतुलन को ठीक करने के उपाय

अध्याय – 23 विदेशी व्यापार नीति

निर्यात–आयात नीति, विदेशी व्यापार नीति 2004–2009, निर्यात–आयात नीति 2009–14, निर्यात–आयात नीति, 2009–14 के लिए वष्र 2013–14 का वार्षिक घोषणा पत्र

अध्याय – 24 निर्धनता

अर्थ, निर्धनता रेखा, निर्धनता रेखा का निर्धारण, निर्धनता की प्रवृत्तियाँ, निर्धनता के कारण, सरकार द्वारा निर्धानता दूर करने के उपाय, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों का मूल्यांकन, सुझाव

अध्याय – 25 असमानता एवं बेरोजगारी

आय और धन की असमनताएँ, भारत में रोजगार की संरचना (ढाँचा), भारत में बेरोजगारी समस्या की प्रवृति एवं आकार, भारत में बेरोजगारी की समस्या की प्रवृति, भारत में बेरेाजगारी का आकार, शहरी बेरोजगारी, ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दूर करने के लिए उठाए गए कदम, भारत में शिक्षित बेरोजगारी, भारत में ग्रामीण बेराजगारी के कारण, बेरोजगारी की समस्या निवारण के लिए सुझाव, प्रच्छन्न बेरोजगारी का आशय एवं प्रवृति, भारत में बचत समर्थता के संग्रहण से कठिनाइयाँ, भारत में बेरोजगारी की प्रकृति/स्वरूप व किस्में, बेरेाजगारी के सम्बन्ध में सरकार की नीति और उपाय

अध्याय – 26 मूल्य वृद्धि

कीमतों को प्रभावित करने वाले माँग पक्ष की ओर के, घटक, मुद्रा स्फीति के परिणाम, सरकार की नीति